Date
12/05/2020

Subject - Social Studies
Topic - Panchsheel

D.El.Ed
4th Sem

पंचशील

29 अप्रैल, 1954 को तिब्बत के सम्बन्ध मे भारत और चीन के बीच हुए एक समझौते मे 'पंचशील' के सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया गया था।

28 जून, 1954 को चीन के प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई व भारत के प्रधानमन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने पंचशील मे अपने विश्वास को दोहराया।

अप्रैल, 1955 मे बाण्डुंग सम्मेलन मे पंचशील सिद्धान्तो को पुनः विस्तृत कर दिया गया। बाण्डुंग सम्मेलन मे ही विश्व के असंख्य राष्ट्रो ने पंचशील सिद्धान्त को मान्यता दी।

(पंचशील सिद्धान्त) - या आचरण के पांच सिद्धान्त

पंचशील के पांच सिद्धान्त है जिनका विवरण इस प्रकार है-

(i) एक-दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और सर्वोच्च सत्ता के लिए पारस्परिक सम्मान की भावना।

(ii) अनाक्रमण या एक-दूसरे पर आक्रमण न करना।

(iii) एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों मे हस्तक्षेप न करना।

(iv) समानता एवं पारस्परिक लाभ के सिद्धान्तो के आधार पर सम्बन्ध स्थापित करना।

(v) शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त को स्वीकार करना।

Scanned with CamScanner

पंचशील का महत्तव

पंचशील के सिद्धान्त आदर्श है जिन्हे यथार्थ जीवन मे उतारा जाना चाहिए। इनसे हमे नैतिक शक्ति मिलती है। आलोचको के अनुसार- भारत -चीन की पृष्ठभूमि पर पंचशील अत्यन्त असफल सिद्धान्त सिद्ध हुआ क्योकि चीन ने सन 1962 ई० मे भारत पर आक्रमण कर दिया था।

आचार्य कृपलानी ने कहा था कि "यह महान सिद्धान्त पापपूर्ण परिस्थितियो की उपज है क्योकि यह आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से हमारे साथ सम्बद्ध एक प्राचीन राष्ट्र के विनाश पर हमारी स्वीकृति पाने के लिए प्रतिपादित किया गया था। इस तथ्य के बावजूद पंचशील के सिद्धान्त को एक शान्तिपूर्ण विश्व व्यवस्था स्थापित करने का एक अहम कारक माना जाता है।

12/15/2020 3:05 PM

Complete

Scanned with CamScanner